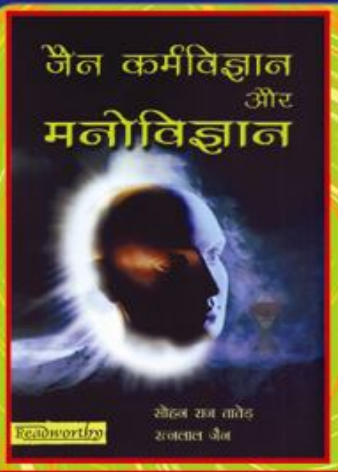

जैन कर्मविज्ञान और मनोविज्ञान

सोहन राज तातेड़
रत्न लाल जैन

ISBN 10: 93-5018-026-X

पुस्तक के संबंध में

सभी भारतीय दर्शन जो आत्मा में विश्वास करते हैं कर्म की प्रधानता को स्वीकार करते हैं। जैन दर्शन भी उनमें से एक है। जैन कर्म-सिद्धांत एक पूर्ण वैज्ञानिक सिद्धांत है। जैन सिद्धांत का मानना है कि कर्मविज्ञान मनोविज्ञान को संचालित करता है तथा दोनों एक-दूसरे के पूरक है।

इस पुस्तक में जैन कर्मविज्ञान और मनोविज्ञान के अंतसंबंधों की विस्तृत व्याख्या की गई है। जैन कर्म-सिद्धान्त की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए, यह पुस्तक जैन दर्शन में कर्म-बंधन व मुक्ति, जैसा कर्म वैसा भोग, कर्म-सिद्धांत और वंश-परम्परा विज्ञान, कर्म निर्जरा के स्वरूप, आत्मा विज्ञान, समता विज्ञान संक्रमकरण तथा कर्मवाद के मनोविज्ञानिक पहलू की विस्तार पूर्वक विवेचना प्रस्तुत करती है।

सोहन राज तातेड़

सोहन राज तातेड़ सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनूं-राजस्थान) के कुलपति एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय एवं सिंघानिया विश्वविद्यालय के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। पूर्व में डॉ. तातेड़ राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवारत रहे तथा अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृति प्राप्त की। डॉ. सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा पर 20 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

रत्नलाल जैन

रत्नलाल जैन (एम.ए., एम.एड., पीएच.डी.) जैन धर्म एवं दर्शन के जाने-माने विद्वान है। आप हरियाणा शिक्षा विभाग में 40 वर्ष तक शिक्षक के रूप में सेवा करते हुए प्राचार्य के पद से सेवानिवृत हुए। राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्र-पत्रिकाओं में आपके अनेक शोधलेख प्रकाशित हो चुके है। आपने अनेक विद्वत्-सम्मेलनों में भी शोधपत्र प्रस्तुत किये है। आपकों अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है।

93-5018-026-X

9 789350 180266

Rs. : 595.00

प्रकाशक
Readworthy Publications (P) Ltd.
बिक्री कार्यालय
4735/22, प्रकाशदीप बिल्डिंग, भू-तल, अंसारी रोड़, दरियागंज,
नई दिल्ली - 110 002-02
टेलीफोन : 011-4354 9197
संपादकीय कार्यालय
बी-65, मंसा राम पार्क, नवादा मेट्रो स्टेशन के समीप,
नई दिल्ली - 110 059
टेलीफोन : 011-2533 3244
Email: info@readworthypub.com
Web: www.readworthypub.com

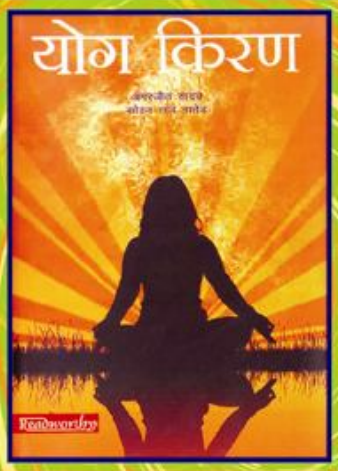

योग किरण

लेखक
अमरजीत यादव
सोहन राज तातेड़

ISBN 93-5018-029-4

पुस्तक के संबंध में

आज मानव-जीवन अपेक्षाकृत ज्यादा तनावग्रस्त एवं विशादपूर्ण हो गया है। बच्चा हो या बूढ़ा, स्त्री हो या पुरूष, शिक्षित हो या अशिक्षित, सभी किसी न किसी रूप से मनोरोगों एवं व्यक्तित्व विघटन के शिकार है। वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ नैतिकता की चकाचौंध न स्थिति को और जटिल बना दिया है। इस गम्भीर स्थिति को समझने व इसके निदान के लिए योग ही एक मात्र सशक्त माध्यम है क्योंकि यह जीवन का विज्ञान और जीवन जीने की कला है।

इस पुस्तक में योग की विभिन्न अवधारणाआं की विस्तृत व्याख्या की गई ह। साथ ही मनुष्य की शारीरिक और मानसिक बीमारियो एवं उनके उपचार पर भी प्रकाश डाला गया है। इसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि योग क आठों अंगो-यम, नियम, आसन, प्राणायान, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि - को आत्मसात करके सभी तरह के शारीरिक एवं मानसिक रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है।

लेखक परिचय

अमरजीत यादव

अमरजीत यादव लखनऊ विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश) के योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पाठ्यक्रम में शिक्षक है। आपके कई दर्शन शोध-पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. यादव योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा की अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

सोहन राज तातेड़

सोहन राज तातेड़ सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनूं-राजस्थान) के कुलपति एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं के मानद सलाहकार रह चुके है। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय एवं सिंघानिया विश्वविद्यालय के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। पूर्व में डॉ. तातेड़ राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवारत रहे तथा अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृति प्राप्त की। डॉ. सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा पर बीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

93-5018-029-4
9 789350 180297

Rs. : 595.00

प्रकाशक
Readworthy

Sales Office
4735/22, Prakash Deep Building, Ground Floor,
Ansari Road, Daryaganj, New Delhi - 110002-02
Phone : 011-43549197
Editorial & Regd. Office
B-65, Mansa Ram Park, Near Nawada Metro Station,
New Delhi - 110059-06
Phone : 011-25333244
Email : info@readworthypub.com
Web : www.readworthypub.com

योग एवं समग्र स्वास्थ्य

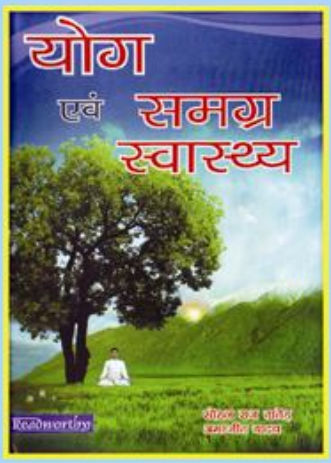

लेखक
अमरजीत यादव
सोहन राज तातेड़

ISBN 93-5018-028-6

पुस्तक के संबंध में

मनुष्य प्रकृति की एक दिव्य रचना है और भौतिक जगत् व्यक्ति के दिव्य गुणों का उद्घाटन करने की एक महान प्रयोगशाला है। किन्तु यह तभी संभव हो पायेगा जब मनुष्य को समग्र स्वास्थ्य उपलब्ध हो। मात्र बीमारी या शारीरिक दुर्बलता से मुक्ति पाना ही स्वास्थ्य नहीं होता, बल्कि व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्थितियों में पूर्ण समन्वयन ही स्वास्थ्य है। समग्र स्वास्थ्य हमारी आंतरिक घटना है। शारीरिक स्वास्थ्य आंतरिक स्वास्थ्य का प्रतिबिम्ब है।

प्रस्तुत पुस्तक में योग और समग्र स्वास्थ्य की अवधारणाओं का वैज्ञानिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण से विवेचन किया गया है। महर्षि पंतजलि द्वारा वर्णित 'अष्टांग योग' के विभिन्न आयामों के समग्र स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों की भी विस्तृत व्याख्या की गई है। इस पुस्तक में इस बात पर विशेष जोर दिया गया है कि समग्र स्वास्थ्य योग द्वारा ही संभव है।

लेखक परिचय

अमरजीत यादव

अमरजीत यादव लखनऊ विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश) के योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पाठ्यक्रम में शिक्षक है। आपके कई दर्शन शोध–पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. यादव योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा की अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय संस्थाओं से भी जुडे हुए हैं।

सोहन राज तातेड़

सोहन राज तातेड़ सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनूं–राजस्थान) के कुलपति एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय एवं सिंघानिया विश्वविद्यालय के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। पूर्व में डॉ. तातेड़ राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवारत रहे तथा अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृति प्राप्त की। डॉ. सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा पर बीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

93-5018-029-4
9789350180297

Rs. : 495.00

प्रकाशक
Readworthy
Sales Office
4735/22, Prakash Deep Building, Ground Floor,
Ansari Road, Daryaganj, New Delhi - 110002-02
Phone : 011-43549197
Editorial & Regd. Office
B-65, Mansa Ram Park, Near Nawada Metro Station,
New Delhi - 110059-06
Phone : 011-25333244
Email : info@readworthypub.com
Web : www.readworthypub.com

WOMAN AND RELIGIONS

An Encyclopaedia on Women in Different Religion of the World

Woman and Christianity

ISBN 978-81-8484-065-0

ANIL DUTTA MISHRA (Chief Editor) * S.R. TATER - A.N. PANDA - S.K. JHA

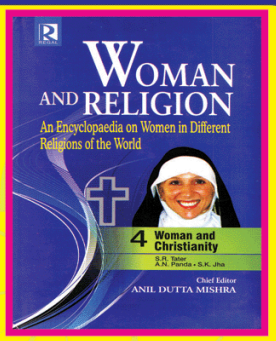

ABOUT THE BOOK

Christianity is one of the oldest religion in the world. It has the largest number of adherents in the world. Christianity is a fertility religion. It teaches that the Creator gave to mankind this primary directive: "be fruitful and multiply". Jesus Christ commanded His disciples "to bear much fruit". The blessings promised for obedience to Biblical Law are blessings of the fruit of the field and of the womb. Fertility is a theme which can be found throughout the Scriptures.

Status of women tells a lot about a society or a religion. Condition of women is an indication of the flexibility and adaptability of any religion. Christianity is a religion which promises equal rights and opportunities of women. In today's time, Christianity is the religion where women are most progressive. In every country where Christianity is the major religion, women enjoy equal opportunities.

This book considers the role of a women in Christianity. Right from the early days of this religion, this book traces the evolution of Christianity over the years and women's role in it. We hope that students of religious studies will appreciate this book.

Contents include : Introduction; Life and Teachings of Jesus Christ; Women and Christianity: Representation and Practices; Status of Women in Christianity; Prominent Christian Women; Christianity and Women's Rights; Women in Church History, Prophets and Martyrs; Women Pastors and Teachers in the Early Church; Women's Ministries in the Early Church; Promoting Women's Equal Dignity; Women's Missionary Societies; Women in 21st Century.

ABOUT THE AUTHOR

Dr. Anil Dutta Mishra (Chief Editor) started his career as an Assistant Professor in the Department of Non-violence and Peace Studies, Jain Vishva Bharti Institute (Deemed University), Ladnun, Rajasthan.

He has been connected with a number of national and international organizations in various capacities like General Secretary of Indian Society of Gandhian Studies and member, Board of Studies, Punjab University and Nagpur University.

He has authored/edited more than dozen books including problem and Prospects of Working Women in Urban Indian (1994); Perspectives on Human Rights (2002); Rediscovering Gandhi (2002); Challenges of Twenty-first Century and Gandhian Alternative (2003); India and Canada : Past, Present and Future (2003); Public Governance and Decentralization : Essays in Honour of T.N. Chaturvedi (2003); Globalization : Myth and Reality (2004); and Gandhian Alternative, Vol. III, Socio- Political Thought (2005).

Dr. S.R. Tater is former Vice-Chancellor, Singhania University, and former Adviser, Jain Vishva Bharati University, Ladnun, Rajasthan. Earlier he served in Public Health Engineering Department, Government of Rajasthan, for Thirty years and took voluntary retirement from the post of Superintending Engineer.

A well-known scholar Dr. Tater has written eight books and fifty research papers published in National and International Journals. His area of specialization apart from Engineering, are Philosophy, Yoga and Education. He has been awarded with Indira Gandhi Rashtriya Ekta Award, Yuvak Ratna, Jain Gyan Vigyan Minishi, Rastriya Samrasta Excellency Award and Yoga Ratna National awards. Presently, he is Emeritus Professor in Jodhpur National and Singhania University.

Dr. A. N. Panda is Associate Professor in P.G. Department of Political Science, Panchayat (Government Lead) College, Bargarh, Orissa. He passed M.A. from Sambalpur University, Orissa with distinction and was placed in the 2nd position. He got his Ph.D. from the same University in 1995. He has been teaching undergraduate and Post-graduate students since 1981. He has guided a number of research scholars. He is a member of many professional associations, such as IIPA, New Delhi, IACIS, Hyderabad, IPSA, OPSA, ISEs and IACS.

Prof. S. K. Jha is a Senior Assistant Profesor of Business Management, Department of Agricultural Economics, Rajendra Agricultural University, Pusa, Bihar. He is member of many professional organizations – IIPA, New Delhi, ISGS and other organizations. He has participated in number of National and International Conferences. His latest work on "Mahatma Gandhi and Gita" and "Boro-Rice Productivity in India" has been well appreciated in academic circle. Presently, he is working on Stress Management.

ISBN 978-81-8484-065-0
9 788184 840650
₹ 12500 (Set)

REGAL

WOMAN AND RELIGIONS

An Encyclopaedia on Women in Different Religion of the World

Woman and Islam

ISBN 978-81-8484-065-0

ANIL DUTTA MISHRA (Chief Editor) * ZINAT ARA - S.R. TATER - S.K. JHA

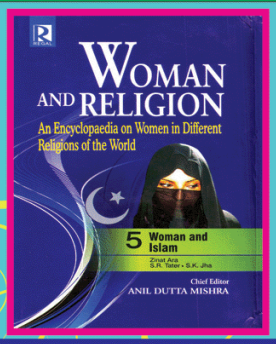

ABOUT THE BOOK

"Woman and Islam" is a manifesto to understand the essence of women in Islam.

In an age when no country, no system, no community gave women any rights and in a society where the birth of a baby girl was regarded as a curse, where women were considered chattel, Islam treated women as individuals. Long ago, Islam gave women, rights that modern nations have conceived grudgingly and only under pressure.

Since the Quran places great emphasis on human dignity and freedom, it is inconceivable that it would tolerate any form of discrimination based on race, colour or gender. In fact because of its protective attitude towards all the downtrodden, the Quran appears to be weighted in many ways in favour of women. The only criterion by which a person is to be judged is its piety (Taqwa) which means "to desist from wrong-doing".

On coming of age, a woman under Islamic law is vested with all the rights which being to her as an independent human being. This book is divided into 12 chapters, all of which are supporting the same subject.

Contents include : Introduction; Equality of Women in Islam, Liberalization of Women's Rights; Segregation of Men and Women is Islam, Women, Islam and the Law; Marriage Laws, Polygamy, Concubinage and Slavery; The Veil and Women's Seclusion; Muslim Women and Talaq; Islam, Women and Social Change; Women in Islam and Muslim Societies; Muslim Women in the 21st Century.

ABOUT THE AUTHOR

Dr. Zinat Ara did her M.A. and Ph.D. (Pol. Sc.) from J.M.I. University, New Delhi. Her area of specialization is Indian Government and Politics, Human Rights and women studies. She is associated with a number of professional organizations. She has participated in National and International Seminar s and presented papers. She I a member of Gandhian Study Centre, S.P.M. College. Presently she is Associate Professor in the Department of Political Science, S.P.M. College, Delhi University.

Dr. S.R. Tater is former Vice-Chancellor, Singhania University, and former Adviser, Jain Vishva Bharati University, Ladnun, Rajasthan. Earlier he served in Public Health Engineering Department, Government of Rajasthan, for Thirty years and took voluntary retirement from the post of Superintending Engineer.

A well-known scholar Dr. Tater has written eight books and fifty research papers published in National and International Journals. His area of specialization apart from Engineering, are Philosophy, Yoga and Education. He has been awarded with Indira Gandhi Rashtriya Ekta Award, Yuvak Ratna, Jain Gyan Vigyan Minishi, Rastriya Samrasta Excellency Award and Yoga Ratna National awards. Presently, he is Emeritus Professor in Jodhpur National and Singhania University.

Prof. S. K. Jha is a Senior Assistant Profesor of Business Management, Department of Agricultural Economics, Rajendra Agricultural University, Pusa, Bihar. He is member of many professional organizations – IIPA, New Delhi, ISGS and other organizations. He has participated in number of National and International Conferences. His latest work on "Mahatma Gandhi and Gita" and "Boro-Rice Productivity in India" has been well appreciated in academic circle. Presently, he is working on Stress Management.

ISBN 978-81-8484-065-0
9 788184 840650
₹ 12500 (Set)

REGAL

WOMAN AND RELIGIONS

An Encyclopaedia on Women in Different Religion of the World

Woman and Jainism

ISBN 978-81-8484-065-0

ANIL DUTTA MISHRA (Chief Editor) * SADHANA THAKUR - ANEKANT JAIN - S.R. TATER

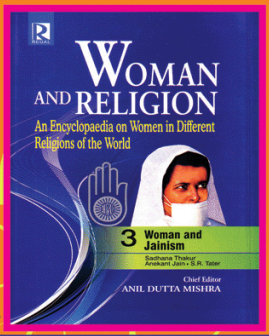

ABOUT THE BOOK

Indian culture consists of two main tradition's – Sramanic and Brahmanic. The Vedic traditions come under the Brahmanic trend. The Sramanic trends covers the Jain and Buddhist traditions.

Jainism is an eternal and scientific religion. A dispassionate and in-depth study of Jaina literature enables. One to get a fair idea of the position of woman in Jainism. Jainism is noted for activism. Its monks and nuns are ever vigilant and active. It is a religion of religious equality, devoted to recognizing the rights of all living creature.

This books provides the in-depth study of Woman and Jainism.

Contents include : Introduction, Jainism with the Passage of Time; The Philosophy of Mahavir Towards Life; The Jain Culture: Different Perspectives; Life Story in Jainism and Role of a Mother; History of Jain Community: Women as Nuns or Laywomen; Women and Jainism; Women's Role in Jain Worship and Religious Customs; The Nine Categories of Fundamental Truths; Jain Philosophy: A Brief Perspective; Rituals of Jainism: Performing Pratikraman; Jainism : Some Interesting Facts; Concept of God in Jainism; Ahimsa: A way of Life in Jainism; The Future of Jainism in 21st Century.

ABOUT THE AUTHOR

Dr. Sadhana Thakur did her M.A. (1991) and Ph.D. (1997) in Political Science from Patna University. her area of specialization includes – Women Empowerment, Rural Development and Human Rights.

She is a member of many professional associations, such as IIPA, IPSA, ISGS and IACS. Dr. Thakur, a prolific writer and brilliant scholar, has been teaching Political Science at Sri Arvind Mahila College, Patna (M.U.) Science fourteen years.

Dr. Anekant Jain did his M.A. and Ph.D. from Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun, Rajasthan. He is connected with number of national and international organizations.

he has written and edited five books and more than thirty-five research articles published in academic research journals. Presently, he is Senior Assistant Professor, Department of Jain Philosophy, Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidhyapeeth, Deemed University, New Delhi.

Dr. S.R. Tater is former Vice-Chancellor, Singhania University, and former Adviser, Jain Vishva Bharati University, Ladnun, Rajasthan. Earlier he served in Public Health Engineering Department, Government of Rajasthan, for Thirty years and took voluntary retirement from the post of Superintending Engineer.

A well-known scholar Dr. Tater has written eight books and fifty research papers published in National and International Journals. His area of specialization apart from Engineering, are Philosophy, Yoga and Education. He has been awarded with Indira Gandhi Rashtriya Ekta Award, Yuvak Ratna, Jain Gyan Vigyan Minishi, Rastriya Samrasta Excellency Award and Yoga Ratna National awards. Presently, he is Emeritus Professor in Jodhpur National and Singhania University.

ISBN 978-81-8484-065-0
9 788184 840650
₹ 12500 (Set)

REGAL

WOMAN AND RELIGIONS

An Encyclopaedia on Women in Different Religion of the World

Woman and Sikhism

ISBN 978-81-8484-065-0

ANIL DUTTA MISHRA (Chief Editor) * S.R. TATER - S.K. JHA

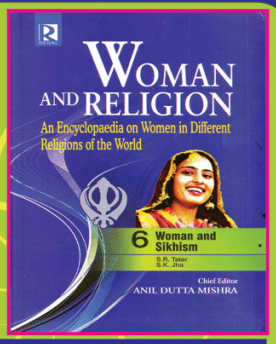

ABOUT THE BOOK

The Sikhs are a community who occupy a prominent place among the Indian races and a high rank in the Modern Indian Army on account of their marital instincts, bravery, and loyalty, insomuch so that Sir Lepel Griffin in his "Ranjit Singh" calls them "the sword and shield of our empire in the East". Their religion is so cosmopolitan that it is being claimed by the Hindu, the Muhammadan and the Christian as the outcome of his religion – in fact it is a faith that may well be considered the universal religion – its cardinal doctrines being the Unity of God and the brotherhood of man. Contemporary writings of the Guru in kthe form of hymns in Guru Granth Sahib and Dasam Granth written by Guru Gobind Singh are most authentic documents. They speak about the various facets of the time from philosophy, morality, ethics to society, economy, trade, commerce, revenue, administration and the ruling community of that time. Works written after the Gurus in the 18th and early 19th century, Akhbarats of Mughal Court and Persian chronicles provide good material to construct unique history of the Sikhs.

This book provides and indepth study on Woman and Sikhism.

Contents include : Introduction to Sikhism; Status of Women in Sikhism; Rights of Sikh Women; Religion and Sikh Women; Elevation of Sikh Women in a Spiritual Way; Theology and Sikh Women; Marriage Ceremony and the Sikh Women; The Religious Ceremonies and Sikh Women; Empowerment of Sikh Women; The Role of Sikh Women in 21st Century.

ABOUT THE AUTHOR

Dr. S.R. Tater is former Vice-Chancellor, Singhania University, and former Adviser, Jain Vishva Bharati University, Ladnun, Rajasthan. Earlier he served in Public Health Engineering Department, Government of Rajasthan, for Thirty years and took voluntary retirement from the post of Superintending Engineer.

A well-known scholar Dr. Tater has written eight books and fifty research papers published in National and International Journals. His area of specialization apart from Engineering, are Philosophy, Yoga and Education. He has been awarded with Indira Gandhi Rashtriya Ekta Award, Yuvak Ratna, Jain Gyan Vigyan Minishi, Rastriya Samrasta Excellency Award and Yoga Ratna National awards. Presently, he is Emeritus Professor in Jodhpur National and Singhania University.

Prof. S. K. Jha is a Senior Assistant Profesor of Business Management, Department of Agricultural Economics, Rajendra Agricultural University, Pusa, Bihar. He is member of many professional organizations – IIPA, New Delhi, ISGS and other organizations. He has participated in number of National and International Conferences. His latest work on "Mahatma Gandhi and Gita" and "Boro-Rice Productivity in India" has been well appreciated in academic circle. Presently, he is working on Stress Management.

ISBN 978-81-8484-065-0
9 788184 840650
₹ 12500 (Set)

REGAL

WOMAN AND RELIGIONS

An Encyclopaedia on Women in Different Religion of the World

Woman and Judaism

ISBN 978-81-8484-065-0

ANIL DUTTA MISHRA (Chief Editor) * ASHUTOSH PANDEY - SADHANA THAKUR - S.R. TATER

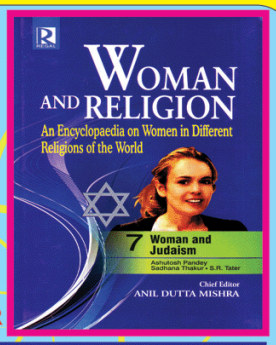

ABOUT THE BOOK

The area of Women's Studies has attracted many social scientists during the last three decades to the various issues related to women. It is difficult to generalize about the conditions of Jewish women throughout history, considering the different societies, life styles and enormous range of circumstances to which they adapted themselves. This book deals with politics, awareness and women's movement in Judaism. Jewish women, as much as men, have the mental and emotional capacities to deal directly with the most sacred Jewish texts and primary sources. Some women, as some men, are capable of functioning in the positions of authority related to the religious and physical survival of the Jewish people. In such matters as marriage and divorce, women should have no less control or personnel freedom than a man, nor should she be subject to abuse resulting from the constrictions of freedom.

Contents include : Women's Equality in Judaism; Judaism, Law and Women; Women's Movement and Teaching of Judaism; Marriage and Women; Divorce in Judaism Law; Abortion Principles in Judaism; Modern Challenge of Feminism; Religion as Women's Business; Judaism Women's Religious Lives; Women's Lives and Diaspora in Judaism; Interpretation of Judaism Women; The Portrayal of Women in Judaism; Women's Education in Judaism; Judaism Women Towards 21st Century.

ABOUT THE AUTHOR

Dr. Ashutosh Pandey after passing his Post-Graduation in Political Science from the University of Alahabad in 1996, is working as faculty member in the Department of Political Science, Amar Singh (P.G.) College, Lakhaoti, Bulandshahar. He has published several research articles in different journals. He is currently pursuing his D.Phil. in Political Science Department from University of Allahabad. his area of specialization include : Indian Government and Politics, Grassroots Politics, Ecology and Human Rights, and Public Administration. He has been a member of several learned associations such as IPSA, IIPA, ISSA, ISGS and Christian Alumni Society. He has participated in several national seminars and conferences and presented papers in them.

Dr. Sadhana Thakur did her M.A. (1991) and Ph.D. (1997) in Political Science from Patna University. her area of specialization includes – Women Empowerment, Rural Development and Human Rights.

She is a member of many professional associations, such as IIPA, IPSA, ISGS and IACS. Dr. Thakur, a prolific writer and brilliant scholar, has been teaching Political Science at Sri Arvind Mahila College, Patna (M.U.) Science fourteen years.

Dr. S.R. Tater is former Vice-Chancellor, Singhania University, and former Adviser, Jain Vishva Bharati University, Ladnun, Rajasthan. Earlier he served in Public Health Engineering Department, Government of Rajasthan, for Thirty years and took voluntary retirement from the post of Superintending Engineer.

A well-known scholar Dr. Tater has written eight books and fifty research papers published in National and International Journals. His area of specialization apart from Engineering, are Philosophy, Yoga and Education. He has been awarded with Indira Gandhi Rashtriya Ekta Award, Yuvak Ratna, Jain Gyan Vigyan Minishi, Rastriya Samrasta Excellency Award and Yoga Ratna National awards. Presently, he is Emeritus Professor in Jodhpur National and Singhania University.

ISBN 978-81-8484-065-0
9 788184 840650
₹ 12500 (Set)

REGAL

मेघप्रदीप

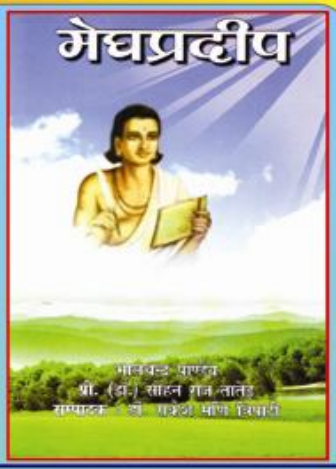

भालचन्द्र पाण्डेय
प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़
सम्पादक : डॉ राकेश मणि त्रिपाठी

ISBN - 978-81-9100063-6-0

पुस्तक के संबंध में

"मेघदूत" महाकवि कालिदास का एक प्रतिनिधि गीतिकाव्य है, जो कि संस्कृत भाषा में रचित है। इसका हर श्लोक संस्कृत प्रेमियों की जुबान पर सदैव मुखरित होता है। "मेघदूत" को आधार मानकर हमने "मेघप्रदीप" की रचना की है। "मेघप्रदीप" मेघदूत का अक्षरसः हिन्दी भाषा में पद्यानुवाद नहीं है। "मेघदूत" के कथानक और भावों के आधार पर करीब 200 पद्यों में हिन्दी भाषा में इसकी रचना की गई है। भौगोलिक स्थानों और प्राकृतिक दृश्यों का इस गीतिकाव्य में कुल 15 दृश्यों के माध्यम से बहुत ही रोचक ढंग से वर्णन किया गया है। "मेघप्रदीप" की पद्यावली "मेघदूत" का स्मरण कराती है। बड़े वैशिष्ट्यपूर्ण ढंग से इस गीतिकाव्य की रचना की गई है। इस गीतिकाव्य में नारी प्रेम की उदारता तथा विशुद्धता, प्रकृति चित्रण एवं संयोग–वियोग उभय अवस्थाओं का सांगोपांग पद्य रूप में चित्रण किया गया है।

कलिष्ठ "मेघदूत" संस्कृत गीतिकाव्य को सरल हिन्दी में पद्यानुवाद कर "मेघप्रदीप" गीतिकाव्य के रूप में आमजन को समर्पित करने के उद्देश्य से हमने यह विनम्र प्रयास किया है। साहित्यकारों, विद्वानों एवं पाठकों के सम्मुख हमारी यह कृति प्रस्तुत कर हमें प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। पाठकों की संतुष्टि ही हमारे लिए महान् पारितोषिक होगा। इसके परिशोधन के लिए सुझाव आमंत्रित है।

लेखक के संबंध में

डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी : पिता का नाम : श्री गिरिजा शंकर त्रिपाठी, जन्म तिथि : 6 जुलाई, 1961, जन्म स्थान : ग्राम–पूराकोदई, पो.–बालवरगंज, तह.– मछली शहर, जिला–जौनपुर (उत्तर प्रदेश), शैक्षणिक अर्हता : एम.ए.दर्शनशास्त्र, प्राकृत (लब्ध स्वर्णपदक), साहित्याचार्य, पी–एच.डी., रुचियाँ : (1) संस्कृत और हिन्दी की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लेखन कार्य, (2) संस्कृत एवं साहित्यिक गोष्ठियों में व्याख्यान, (3) आकाशवाणी से समसामयिक विषयों का प्रसारण। प्रकाशन : (1) जैन आगमों और उपनिषदों की आचार मीमांसा, (2) जैन कर्म मीमांसा : शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक अध्ययन, (3) छन्दोऽलंकार विवेचन सम्पादन : (1) तुलसी साहित्य में उदात्त तत्व (2) मेघप्रदीप, प्रकाशनार्थ : (1) वैदिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (2) संस्कृत साहित्य का मौलिक इतिहास

शोध पत्र प्रकाशित : 21, सेवाकार्य : सहमंत्री, अणुव्रत समिति, लाडनूं (राज.), सम्मान : 'अणुव्रत शिक्षक सम्मान' से सम्मानित

सम्पर्क सूत्र : डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी, व्याख्याता, संस्कृत ब्राह्मी विद्यापीठ महाविद्यालय लाडनूं – 341306, जिला – नागौर (राजस्थान), मो. 91 9982088746

प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड़ : (जन्म 1947) पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनूं–राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) एवं सिंघानिया विश्वविद्यालय (राज.) के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। वे दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों में विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पीएच.डी. शोध निर्देशक हैं। पूर्व में तातेड़ ने राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवा देकर अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृत्ति लेकर अभी शिक्षा क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। वे भारत एवं विश्व की अनेक शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में ऐसोसियेट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य हैं। डॉ. तातेड़ जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, नेपाल एवं भूटान देशों की विदेश यात्रा कर चुके हैं। जाने माने विद्वान प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयक 20 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 15 पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। इसके अतिरिक्त इनके 50 से अधिक शोध पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने 50 से अधिक राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने शोध पत्र/व्याख्यान प्रस्तुत किए। आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड, समाज भूषण, युवक रत्न, जैन ज्ञान–विज्ञान मनीषी, राष्ट्रीय समरसता एक्सीलेन्सी एवार्ड, राजीव गांधी एवार्ड, इन्डो–नेपाल हारमोनी, प्राकृतिक चिकित्सा रत्न और योग रत्न राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हैं।

भालचन्द्र पाण्डेय : पिता का नाम : श्री रामसूरत पाण्डेय, जन्म तिथि : 7 मई 1948, ग्राम कलमोरवा, जिला अम्बेडकर नगर, 'फैजाबाद' (उ.प्र.), शिक्षा : बी.एड., एम.ए. (अंग्रेजी, भूगोल एवं संस्कृत)

अनुभव : 35 वर्ष राजस्थान राजकीय सेवा में अंग्रेजी एवं भूगोल व्याख्याता, सम्मान : (1) कलकत्ता मनीषिका की ओर से शोधार्थी और विद्वत मंडल की ओर से सम्मानित। (2) राजकीय शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा उच्च शिक्षा परिणाम हेतु सम्मानित एवं प्रशंसित। कृतित्व : (1) 'मेघप्रदीप', खण्डकाव्य, (2) 'कंचनपुर की सोना' लघु उपन्यास (प्रकाश्य) (3) 'अभिषेक' उपन्यास लघु उपन्यास (प्रकाश्य) (4) राष्ट्र की अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित काव्य एवं रचनाएँ (5) कहानियों का संग्रह (प्रकाश्य) (6) शोध एवं अनुसंधान प्रकाशन समिति के मंत्री पद का कार्य वहन किया है।

पारीक पब्लिकेशन्स
3, एसजीएम हाउस, नाटाणियों का रास्ता,
चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)
Email : pareekpublications@yahoo.com

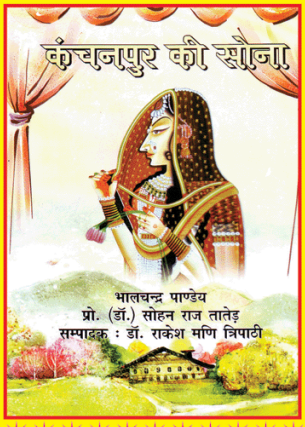

कंचनपुर की सोना

ISBN - 978-81-10063-7-7

भालचन्द्र पाण्डेय
प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड
सम्पादक : डॉ राकेश मणि त्रिपाठी

पुस्तक के संबंध में

साहित्य की अनेक विधाओं में से उपन्यास भी एक विधा है। इस विधा के माध्यम से उपन्यासकार अपने इर्द-गिर्द प्रतिदिन घटने वाली घटनाओं को उपन्यास का रूप देकर समाज को नैतिकता का पाठ पढ़ाता है। उपन्यास के माध्यम से दी जाने वाली सीख सहज ही व्यक्ति के गले उतर जाती है।

''कंचनपुर की सोना'' एक सारगर्भित लघु उपन्यास है। यह आकार में छोटा है लेकिन इसके माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा बहुत बड़ी है। ''कंचनपुर की सोना'' उपन्यास की मुख्य पात्रा सोना एक पतिता नारी है, लेकिन उसके हृदय में नारीत्व का गुण विद्यमान है। उस पतिता ने एक भरे पूरे खुशहाल घर के मालिक को अपने पाश-बंधन में बांधकर उस परिवार को पतझड़ की तरह उजाड़ दिया। लेकिन ढलती उम्र में पतिता सोना ने अपनी भूल के प्रायश्चित फलस्वरूप उस उजड़े परिवार को फिर से आबाद किया तथा अपने जीवन भर की कमाई उजड़े परिवार के मुखिया के पुत्र को वशीयत कर दी। मुखिया के पुत्र ने सोना को अपनी माँ का दर्जा देकर उसके नाम से महाविद्यालय प्रारम्भ कर उसे समाज में पूजनीया बना दिया।

''कंचनपुर की सोना'' उपन्यास से नसीहत मिलती है कि इंसान गलती का पुतला है। जाने अनजाने जीवन में गलतियाँ होती रहती है। लेकिन उन गलतियों का शुद्ध अंतःकरण से प्रायश्चित करते रहना चाहिए ताकि हमारी आत्मा दुर्गति को प्राप्त न होकर सद्गति को प्राप्त हो। प्रायश्चित एक ऐसी तपस्या है जिसमें जलकर कलुषित अन्तःकरण कुन्दन बन जाता है। यह उपन्यास पाठकों को समर्पित है। उनकी संतुष्टि ही हमारे लिए रिवार्ड है। आशा है कि हमें इसके परिमार्जन हेतु सुझाव देंगे।

लेखक के संबंध में

डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी : पिता का नाम : श्री गिरिजा शंकर त्रिपाठी, जन्म तिथि : 6 जुलाई, 1961, जन्म स्थान : ग्राम-पूराकोदई, पो.-बालवरगंज, तह.- मछली शहर, जिला-जौनपुर (उत्तर प्रदेश), शैक्षणिक अर्हता : एम.ए.दर्शनशास्त्र, प्राकृत (लब्ध स्वर्णपदक), साहित्याचार्य, पी-एच.डी., रूचियाँ : (1) संस्कृत और हिन्दी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य, (2) संस्कृत एवं साहित्यिक गोष्ठियों में व्याख्यान, (3) आकाशवाणी से समसामयिक विषयों का प्रसारण। प्रकाशन : (1) जैन आगमों और उपनिषदों की आचार मीमांसा, (2) जैन कर्म मीमांसा : शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक अध्ययन, (3) छन्दोऽलंकार विवेचन सम्पादन : (1) तुलसी साहित्य में उदात्त तत्त्व (2) मेघप्रदीप, प्रकाशनार्थ : (1) वैदिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (2) संस्कृत साहित्य का मौलिक इतिहास
शोध पत्र प्रकाशित : 21, सेवाकार्य : सहमंत्री, अणुव्रत समिति, लाडनूं (राज.), सम्मान : 'अणुव्रत शिक्षक सम्मान' से सम्मानित
सम्पर्क सूत्र : डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी, व्याख्याता, संस्कृत ब्राह्मी विद्यापीठ महाविद्यालय लाडनूँ – 341306, जिला – नागौर (राजस्थान), मो. 91 9982088746

प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड़ : (जन्म 1947) पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनूं-राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) एवं सिंघानिया विश्वविद्यालय (राज.) के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। वे दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों में विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पीएच.डी. शोध निर्देशक हैं। पूर्व में तातेड़ ने राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवा देकर अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृति लेकर अभी शिक्षा क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। वे भारत एवं विश्व की अनेक शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में ऐसोसियेट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य हैं। डॉ. तातेड़ जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, नेपाल एवं भूटान देशों की विदेश यात्रा कर चुके हैं। जाने माने विद्वान प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयक 8 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 15 पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। इसके अतिरिक्त इनके 50 से अधिक शोध पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने 50 से अधिक राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने शोध पत्र/व्याख्यान प्रस्तुत किए। आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड, समाज भूषण, युवक रत्न, जैन ज्ञान-विज्ञान मनीषी, राष्ट्रीय समरसता एक्सीलेन्सी एवार्ड, राजीव गांधी एवार्ड, इन्डो-नेपाल हारमोनी, प्राकृतिक चिकित्सा रत्न और योग रत्न राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हैं।

भालचन्द्र पाण्डेय : पिता का नाम : श्री रामसूरत पाण्डेय, जन्म तिथि : 7 मई 1948, ग्राम कठमोरवा, जिला अम्बेडकर नगर, 'फैजाबाद' (उ.प्र.), शिक्षा : बी.एड., एम.ए. (अंग्रेजी, भूगोल एवं संस्कृत)
अनुभव : 35 वर्ष राजस्थान राजकीय सेवा में अंग्रेजी एवं भूगोल व्याख्याता, सम्मान : (1) कलकत्ता मनीषिका की ओर स शोधार्थी और विद्वत मंडल की ओर से सम्मानित। (2) राजकीय शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा उच्च शिक्षा परिणाम हेतु सम्मानित एवं प्रशंसित। कृतित्व : (1) 'मेघप्रदीप', खण्डकाव्य, (2) 'कंचनपुर की सोना' लघु उपन्यास (प्रकाश्य) (3) 'अभिषेक' उपन्यास लघु उपन्यास (प्रकाश्य) (4) राष्ट्र की अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित काव्य एवं सरचाएँ (5) कहानियों का संग्रह (प्रकाश्य) (6) शोध एवं अनुसंधान प्रकाशन समिति के मंत्री पद का कार्य वहन किया हैं।

पारीक पब्लिकेशन्स
3, एसजीएम हाउस, नाटानियों का रास्ता,
चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)
Email : pareekpublications@yahoo.com

मूल्य :- एक सौ रुपये मात्र

प्राच्य एवं पाश्चात्य दर्शनों की मौलिक अवधारणाएं

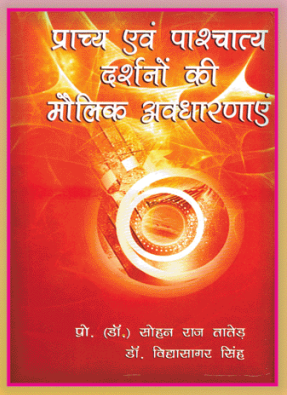

लेखक

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़
डॉ. विद्यसागर सिंह

ISBN : 81-8182-062-2

पुस्तक के संबंध में

दर्शन जीव, जीवन और जगत् की व्याख्या करता है। सृष्टि में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का जीवन जीने के लिए मानव को किस आचार नीति का पालन करना चाहिए, दर्शन इसका शिक्षण एवं प्रशिक्षण देता है। इस सृष्टि में जीवन यापन करने वाले प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ प्राणी मानव ही है। इसलिए मानव की सबसे ज्यादा नैतिक जिम्मेदारी है कि वह सृष्टि में अनुशासित जीवन जीए ताकि अन्य प्राणियों को कष्ट न हो। प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ में प्राच्य एवं प्राश्चात्य दर्शनों की कुछ ऐसी मौलिक अवधारणाओं का विवेचन किया गया है जिससे मानव मस्तिष्क में नैतिकता का अंकुरण प्रस्फुटित हो। वास्तव में अन्तःकरण ही वास्तविकता का मापदण्ड है। इसके आदेश नैतिक नियम है। किसी भी कर्म का औचित्य या अनौचित्य नैतिक नियम के आदेश पर निर्भर करता है। यानी इसके आदेश ही कर्म का औचित्य बतलाते हैं और इसके निषेध से इसका अनौचित्य सिद्ध होता है। अतः कर्म का नैतिक मूल्यांकन स्वयं अन्तःकरण करता है।

प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ विद्वानों, साहित्यकारों, शोधार्थियों एवं पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। विभिन्न दर्शनों की मौलिक अवधारणाओं का अनुसरण कर मानव हृदय अपने अन्तःकरण की शुद्धि कर नैतिकता का रास्ता अपनाए यही हमारे शोध-ग्रन्थ का उद्देश्य है।

लेखक परिचय

डॉ. विद्यासागर सिंह

जन्म तिथि-15 जून, 1952
शैक्षणिक योग्यता-पी.एच.डी., डी.लिट्
माता का नाम- स्व. बच्ची देवी
पिता का नाम- स्व. विन्देश्वरी सिंह
ग्राम पोस्ट रामदीरी, (नकटी) बेगूसराय
कार्यक्षेत्र - व्याख्याता, दर्शन शास्त्र विभाग, रामचरित्रसिंह स्मारक महाविद्यालय, बीहट, पूर्व सदस्य, जिला छात्र संघर्ष समिति
जिला मंत्री, लोकनायक जयप्रकारण नारायण निष्ठा मंच, बेगूसराय

कृतियां प्रकाशनार्थ -
भारतीय भौतिकवाद और मार्क्सवाद : एक तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन
चार्वाक एवं ह्यूम : एक तुलनात्मक दार्शनिक अध्ययन
ज्ञान मीमांसा की समीक्षात्मक विवेचना (प्राच्य और पाश्चात्य)
भारतीय दर्शन में तत्व एवं आचार मींमासा
भारतीय दर्शन की मौलिक अवधारणाएँ
प्राच्य और पाश्चात्य दर्शनों की मौलिक अवधारणाएं

सम्पर्क सूत्र-
डॉ. विद्यासागर सिंह
अध्यक्ष, दर्शन शास्त्र विभाग, रामचरित्रसिंह स्मारक महाविद्यालय
बीहट-851135 जिला- बेगूसराय, (बिहार)

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

(जन्म 1947) पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनूं-राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) एवं सिंघानिया विश्वविद्यालय (राज.) के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। वे दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों में विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पीएच.डी. शोध निर्देशक हैं। पूर्व में तातेड़ ने राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवा देकर अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृति लेकर अभी शिक्षा क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। वे भारत एवं विश्व की अनेक शैक्षिणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में ऐसोसियेट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य हैं। डॉ. तातेड़ जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, नेपाल एवं भूटान देशों की विदेश यात्रा कर चुके हैं।

जाने माने विद्वान प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयक 20 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 15 पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। इसके अतिरिक्त इनके 50 से अधिक शोध पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अन्तराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने 50 से अधिक राष्ट्रीय/अन्तराष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने शोध पत्र/व्याख्यान प्रस्तुत किए। आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड, समाज भूषण, युवक रत्न, जैन ज्ञान-विज्ञान मनीषी, राष्ट्रीय समरसता एक्सीलेन्सी एवार्ड, राजीव गांधी एवार्ड, इन्डो-नेपाल हारमोनी, प्राकृतिक चिकित्सा रत्न और योग रत्न राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हैं।

संस्करण : 2011
मूल्य : चार सौ पचानवे रूपये मात्र (495.00)

ISBN 818182062-2
9788181820624

प्रकाशक
लिट्रेरी सर्किल
सी-12/13, प्रथम तल,
खण्डेलवाल गर्ल्स कॉलेज के सामने,
संसार चन्द रोड़, जयपुर-302001
ईमेल - literarycirclejpr@yahoo.com

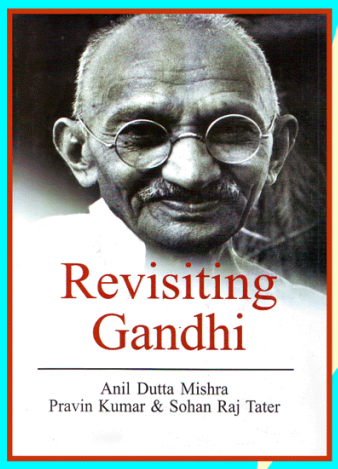

Revisiting Gandhi

Anil Dutta Mishra
Pravin Kumar
Sohan Raj Tater

Contents

Neither Capitalism nor Socialism has been able to solve the contemporary human problems. Here is no hope from corporate world which is a byproduct of liberalization, privatization and globalization. There is a crises of governance. The whole world is in search of an alternative, which must be pro-poor, pro-environment, and pro-humanity. The Gandhian alternative can provide solutions to contemporary problems such as unemployment, unequal distribution of wealth, violation of human rights, terrorism, fundamentalism, exploitation, oppression, environment and climate change, alienation and poverty, if implemented in totality. Gandhian thought and action are directly or indirectly echoed in contemporary debates not only in India but also throughout the globe. In this present book an attempt has been made to rediscover, reinterpret and revisit Gandhi and his thought. Revisiting Gandhi is an intellectual response to solve the contemporary dilemmas and conflicts arising out due to failure of developmental paradigms and failure of leadership. Even the welfare state is not responding as it was expected. Revisiting Gandhi provides some insight on developmental issues. From Gandhian perspectives the real development will take the society from Vikriti (perversion) to Sanskriti (culture). it is not going back, but going in the right direction. All together 28 articles were written by different scholars from diverse fields.

A useful book for researchers, policy makers and students of Gandhian Thought.

ISBN 978-93-81136-01-0

Dr. Anil Dutta Mishra is noted Gandhian Scholar and Dy. Director, National Gandhi Museum, Rajghat, New Delhi.

Dr. Pravin Kumar is a Senior Lecturer in Shyam Lal College, University of Delhi, Delhi.

Dr. Sohan Raj Tater is former Vice Chancellor of Singhania University, Rajasthan.

ABHIJEET PUBLICATIONS
2/46 Tukhmeerpur Extension, Delhi 110 094
Tel: 011-65698474, 22960492
e-mail: abhijeetpublication@gmail.com
abhijeet_singh1@indiatimes.com

ISBN 978-93-81136-01-0
9 789381 136010

तुलसी साहित्य में उदात्त तत्त्व

डॉ. विनोद कुमार मिश्र
सम्पादक : प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड
सम्पादक : डॉ राकेश मणि त्रिपाठी

ISBN - 978-81-8182-061-4

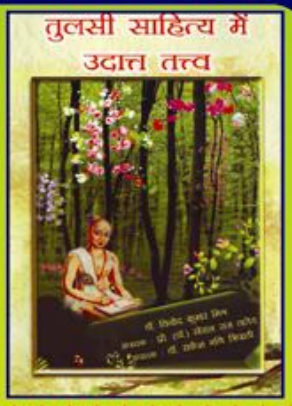

पुस्तक के संबंध में

साहित्य में उदात्त तत्त्व ही सर्वश्रेष्ठ होता है। इसी तत्त्व के कारण साहित्य श्रेष्ठ और उपादेय बन जाता है। अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उत्कृष्टता ही उदात्त तत्त्व कहा जाता है। इसके पूर्व कवियों का मुख्य कार्य पाठकों, श्रोताओं को आनन्द प्रदान करना था। उदात्त एक ऐसी व्यापक अवधारणा है जिसमें प्राकृतिक विराटता, अलौकिक विस्तार, मानवीय गरिमा, भावों की प्रबलता, उद्यम आवेग, विस्मयकारी असाधारणता तथा परम शांति जैसे दिव्य गुणों का सन्निवेश होता है।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में संत तुलसी के काव्य में उदात्त तत्त्वों के परिप्रेक्ष्य में भावाभिव्यंजना, अर्थगाम्भीर्य, उत्कृष्ट भाषा का प्रयोग, भावोत्कर्ष, वर्णन चातुर्य, चारु कथ्य तथ्य, लोक मंगल, परमसुख की दिव्य अन्तर्चेतना का सम्यक संदर्भ विद्यमान है। तुलसी का काव्य भावपक्ष व कलापक्ष की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। प्रस्तुत शोध ग्रन्थ के काव्य में भावों की सुन्दर व्यंजना है। तुलसी ने श्रीराम के चरित्र में उनके शील, सौन्दर्य और शक्ति – इन तीनों गुणों को उजागर किया है। वनवास की स्थिति में सीता की शिथिलता देखकर श्रीराम के नेत्र सजल हो जाते हैं तथा अयोध्यावासी नगर को अनाथ देखकर साथ जाने के लिये उद्यत हो जाते हैं। नगर की स्थिति भयानक और विषम बन जाती है।

लागति अवध भयावनि भारि,
मानहुं काल राति अधियारी,

प्रस्तुत शोधग्रन्थ में तुलसी काव्य में सर्वत्र सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् की स्थापना का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। यह शोध ग्रन्थ साहित्यकारों, शोधार्थियों एवं विद्वानों के सम्मुख इसके परिमार्जन के सुझावों हेतु प्रस्तुत है। पाठकगण की संतुष्टि लेखक एवं सम्पादक द्वय के लिए अति प्रसन्नता का विषय होगी।

लेखक के संबंध में

डॉ. विनोद कुमार मिश्र : जन्मतिथि – 17 जनवरी 1979 ई., जन्म स्थान – (ननिहाल) ग्राम–मदनपुर, पोस्ट–कोईरौना, जिला–सन्त रविदासनगर, भदोही, (उ.प्र.)
पिता – डॉ. उमापति मिश्र, माता – श्रीमती विमला मिश्रा, शिक्षा – एम.ए.–हिन्दी, पी.एच.डी., रचना – 1. तुलसी साहित्य में उदात्त तत्त्व, 2. हनुमतोदय (अप्रकाशित), 3. मन के उद्‌गार (अप्रकाशित)
रूचि – लेखन कार्य, विशेष – कई पत्र–पत्रिकाओं में लेख व कविताएँ प्रकाशित, अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित। सम्प्रति – प्रवक्ता हिन्दी
स्थायी निवास – ग्राम–पुँगराव–खदरान, पोस्ट–हण्डिया, जिला–इलाहाबाद, सम्पर्क सूत्र – 9415194145

प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड़ : (जन्म 1947) पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनूं–राज.) एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं (राज.) के मानद सलाहकार रह चुके हैं। वे जोधपुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.) एवं सिंघानिया विश्वविद्यालय (राज.) के संरक्षक प्रोफेसर भी हैं। वे दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयों में विश्वविद्यालयों में रजिस्टर्ड पीएच.डी. शोध निर्देशक हैं। पूर्व में तातेड़ ने राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग में 30 वर्ष तक सेवा देकर अधीक्षण अभियन्ता पद से स्वेच्छापूर्वक निवृति लेकर अभी शिक्षा क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। वे भारत एवं विश्व की अनेक शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्थाओं में ऐसोसियेट सदस्य, संरक्षक एवं आजीवन सदस्य हैं। डॉ. तातेड़ जापान, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, नेपाल एवं भूटान देशों की विदेश यात्रा कर चुके हैं। जाने माने विद्वान प्रो.(डॉ.) सोहन राज तातेड़ की दर्शन, योग एवं शिक्षा विषयक 8 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा 15 पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। इसके अतिरिक्त इनके 50 से अधिक शोध पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने 50 से अधिक राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं में भाग लेकर अपने शोध पत्र/व्याख्यान प्रस्तुत किए। आप इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता अवार्ड, समाज भूषण, युवक रत्न, जैन ज्ञान–विज्ञान मनीषी, राष्ट्रीय समरसता एक्सीलेन्सी एवार्ड, राजीव गांधी एवार्ड, इन्डो–नेपाल हारमोनी, प्राकृतिक चिकित्सा रत्न और योग रत्न राष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हैं।

डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी : पिता का नाम : श्री गिरिजा शंकर त्रिपाठी, जन्म तिथि : 6 जुलाई, 1961, जन्म स्थान : ग्राम–पूरेकोदई, पो.–बालवरगंज, तह.– मछली शहर, जिला–जौनपुर (उत्तर प्रदेश), शैक्षणिक अर्हता : एम.ए.दर्शनशास्त्र, प्राकृत (लब्ध स्वर्णपदक), साहित्याचार्य, पी–एच.डी., रूचियाँ : (1) संस्कृत और हिन्दी की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लेखन कार्य, (2) संस्कृत एवं साहित्यिक गोष्ठियों में व्याख्यान, (3) आकाशवाणी से समसामयिक विषयों का प्रसारण। प्रकाशन : (1) जैन आगमों और उपनिषदों की आधार मीमांसा, (2) जैन कर्म मीमांसा : शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक अध्ययन, (3) छन्दोऽलंकार विवेचन सम्पादन : (1) तुलसी साहित्य में उदात्त तत्त्व (2) मेघप्रदीप, प्रकाशनार्थ : (1) वैदिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (2) संस्कृत साहित्य का मौलिक इतिहास
शोध पत्र प्रकाशित : 21, सेवाकार्य : सहमंत्री, अणुव्रत समिति, लाडनूं (राज.), सम्मान : 'अणुव्रत शिक्षक सम्मान' से सम्मानित
सम्पर्क सूत्र : डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी, व्याख्याता, संस्कृत ब्राह्मी विद्यापीठ महाविद्यालय लाडनूं – 341306, जिला – नागौर (राजस्थान), मो. 91 9982088746

संस्करण : 2011
मूल्य : चार सौ पचानवे रूपये मात्र (495.00)

प्रकाशक
लिटरेरी सर्किल
सी-12/13, प्रथम तल,
खण्डेलवाल गर्ल्स कॉलेज के सामने,
संसार चन्द रोड़, जयपुर-302001
ईमेल – literarycirclejpr@yahoo.com